भिवानी कैसेट क्रमांक संख्या	108
दिनांक	03. 04. 93
समय	सांय

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियों, सत्संगियों, माताओ और बहनों! जितने भी सत्संगी प्रेमी आए हुए हैं सब से विनती है कि जब तक सत्संग हो शांति से सुनते रहें।

मुझे उम्मीद नहीं थी कि इतनी संगत आएगी। नहीं तो मैं और पहले आ जाता। पर वहाँ भी भारी भीड़ थी। वहाँ तो बड़ी भारी संगत गई हुई है। अब ४ बजकर २५ मिनट हुए हैं। पाँच बजे नामदान का टाइम है। फाल्गुण का सत्संग कब था? उसके पीछे मैंने एक दिन भी आराम नहीं किया है। रात और दिन के सत्संग चलते रहे हैं। काफी भाई तो ऐसे भी रह गए जो कहते रहे कि हमारे यहाँ सत्संग नहीं किया। बेचारे उदास हो गए। फिर भी मैंने बहुत भागा दौड़ी करके हर जगह सत्संग किया है। अब भी कोई शांति नहीं है। अब भी ऐसा ही है आज यहाँ आया हूँ तो कल भी कहीं जाना है। परसो फिर जाना है। तो यही भागा दौड़ रहेगी। पर मुझे ऐसा आदमी कोई भी नहीं मिलता है जो यह बात कह दे कि महाराज जी की हिम्मत ही है। इनकी हिम्मत इन्हीं के पास है और ये ही जानते हैं। इतना कोई कहने वाला अगर मिल जाए तो मैं फिर हारूंगा नहीं। बच्चे से किसी से काम लेना है तो यही कहते हैं कि हमारा लड़का बहुत काम करता है। मुझे बच्चा कहने वाला है ही। चाचा साधुराम कह सकता है। इस तरह के तो और भी बहुत बता दूंगा। एक दिन तो भाई आए थे ये पुलिस के थे। अफसर कौन से थे पर उन्होंने नाम ब्यास से ले रखा था। उन्होंने कहा–हमने आपकी कैसेट सुनी थी। मैंने कहा–बैठ जाओ। उन्होंने कहा–कैसेट सुनने से ही हमें पता चला कि कोई चीज है। मैंने कहा–मैं तो यहाँ बैठा हूँ भाई। देख लो। अब जो उन्होंने बातें की वे बातें तो आपको नहीं बताऊँगा। बेचारे खुश थे और बहुत ही अच्छी बातें की। दूसरी जगह वाले भी अगर ऐसी बातें कहते हैं तो यह बहुत बड़ी बात है। फिर भी इन्सान को सोचना पड़ता है जो हिम्मत करता है, उसकी मालिक भी आप मदद कर देता है। सुना है कि हिम्मत का राम हिमायती होता है। हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। इन्सान कोई भी काम करता है, अगर वह हिम्मत हार जाएगा तो वह गिर जाएगा। कोई भी काम हो, इन्सान क्या कुछ नहीं कर सकता है? वह सब कुछ ही कर सकता है। जो इन्सान हिम्मत हार जाता है, वह कुछ भी नहीं कर सकता है। जो इन्सान हिम्मत रखता है वह चाहे सो कर सकता है। मैंने तो मेरे सतगु३ से यही एक बात सीखी थी। अरमान साहब की बड़ी भारी अपार दया थी। वे कहा करते थे कि हिम्मत थी जैसे भी सतगुरु की दया रही काम करते रहे। अब भी कहते हैं कि करते रहो। काम करने वाला कभी भी गिरेगा नहीं। काम करने वाला कभी भी पीछे नहीं हटेगा। पीछे तो नालायक जो काम नहीं करते हैं वे ही हटते हैं। मैं बनी बनाई जगह पर नहीं आया। अगर तुम पूछना चाहते हो तो मेरा पुराना साथी भाई रतीराम है। जितनी भी नींव रखी गई हैं इसके आगे ही रखी गई हैं। फिर अगर आप यह कहो कि इसको ही नाम क्यों लेते हो? इसका नाम यू लेता हूँ कि कोई तो चले गए, चोला छोड़ गए। कोई वैसे ही घमण्ड में आकर छोड़ गए कि हमारी यहाँ पर पूजा नहीं होती है। कई मान बड़ाई में आकर छोड़ गए कि हम चले जाएँगे तो हमारे बिना यह क्या कर लेगा? चला तो यह भी गया था। यह समझदार है, उर्दू पढ़ा हुआ है। बहुत हुशियार है। कई दिन तक नहीं आया। लेकिन इसके घर से जो सरती है वह देवता है बड़ी भारी। आप यू कहोगे कि भाई की निंदा करते हो और उसको सराहते हो। नहीं मैं इसकी निंदा नहीं करता हूँ। मैं तो सराहता हूँ कि आदमी तो वही होता है जो साथ नहीं छोड़ता है। साथ ही रहता है तो इसके ही वक्त की बात है। क्या हाल था। मेरी यह हिम्मत थी कि देखो

ये लोगों के भंडारे चलते हैं और डेरे बनते हैं। ये किस तरह से क्या बनेंगे? पर बनेंगे। पर मैं अपनी बातें बताता हूँ आज। ये नोट करने की हैं। सत्संग में जाओ कहीं भी जाओ। हिम्मत मत हारो। मैंने हिम्मत नहीं हारी। बड़े–बड़े साथी आए। आए किसी व्यवहार में और चले गए किसी में। सब ही साथ छोड़ते गए। इनका मैं नाम लेता हूँ। दो ही ऐसे आदमी थे–एक अमरचन्द है। ये समझदार है वह बेवकूफ है। वह बहुत पक्का आदमी है। फिर तो काफी आदमी आ गए और वे डिगे नहीं। मैं पुरानी बातें कहता हूँ। जब मैं दुखी था, उस वक्त की बातें हैं। गांव में भी काफी आए और चले गए। जाते रहे। इस तरह ही होता रहा। मेरी नियत यही रहा करती थी कि मालिक! मैं भंडारे लगते देखूं। मैं संगत को देखूं। मैं सच्ची बाते कहता हूँ कि मैं जगह–जगह कूंवे बना दूं। पानी की कमी हो वहीं पानी निकल आए और मैं कूंवे बना दूँ। यह तो मैं बता नहीं सकता हूँ। गांव वाले और ही बता देंगे। सो मेरे विचार गंदे नहीं पड़े। अच्छे ही रहे कि यह बन जाए। वह बन जाए। इस भिवानी के आश्रम के लिए तो शायद बदरी कवि ने भी लिखा होगा। महाराज जी ने भी लिखा था। मुझे याद नहीं है। उन्होंने कहा था कि उस दिन काम पूरा होगा जिस दिन भिवानी में कुटिया बन जाएगी। यह तो उनका भाव था या ख्याल था मैं तो क्या कह सकता हूँ। मेरा तो था नहीं और न मेरे पास चार पैसे थे। न मैं कोई विद्वान था। न मेरी कोई दुहाई फिरती थी। मेरा तो सब कुछ सतगुरु ही था। यह बात जरूर है और मैं इस बात पर अपने भाग्य को सराहता हूँ कि मेरे सतगुरु जैसा सतगुरु किसी को मिला नहीं होगा। मेरे सतगुरु जैसा सतगुरु किसी को मिला नहीं होगा। मेरे सतगुरु पूर्ण पुरुष थे। महाराज फकीरचन्द अपने गुरु की बड़ाई किया करता था और कहा करता था कि जब मैं अपने गुरु के पास गया तो मैं रुपए लेकर गया। मेरी तनख्वाह बहुत थी। चांदी के हुक्के बनवा कर लाया। बड़े ताज चढ़ाए। मैंने अपने सतगुरु के साथ ऐसा तो कभी नहीं किया। उन्होंने बताया था कि मैं एक बार इतने रुपये लेकर गया कि एक पेटी में डाल कर ले गया था और वहां जाकर उनके आगे रख दिए। उन्होंने कहा कि फकीर! क्या लया है? उन्होंने कहा–मैं ये लाया हूं। देख लो। उन्होंने कहा–अरे पगला! इन रुपयों से परमात्मा थोड़े ही मिलेगा। अप्रेम बच्चों को देने थे पगला! उन्होंने कहा–महाराज! मैं तो आपके लिए ही लाया हूं। उन्होने कहा–अच्छा! थोड़ी ही देर बाद उन्होंने कहा–ये लड़की कौन है? वह महाराज फकीरचन्द की धर्मपत्नी थी। मैं बातें ही नहीं बताता। मैं सत्संग भी कराता हूं। इसे तुम अपने दिमाग में बिठाओ और गुरुओं पर भाव और विश्वास लाओ कि सतगुरु कैसे होते हैं। पर मैं अपनी बातें नहीं कह सकता। मेरे बाद मेरे सत्संगी कह देंगे। फकीर ने तो एक ही बात ऐसी कही है। मैं आप लोगों को सतरह बातें ऐसी बता दूंगा। क्यों मैं ऐसी बातें बताऊंगा? इसीलिए कि मेरे सतगुरु पूर्ण पुरुष थे। करणी के धनी और त्यागी थे। सो उन्होंने पूछा–यह मेरी धर्मपत्नी है। फिर उन्होंने पूछा–ये मेरी क्या लगती है? उन्होंने कहा–मुझे क्या पता? उन्होंने कहा–यह मेरी बेटी है। क्या ये मानेगा? उन्होंने कहा–हां, मानूंगा। यह आपकी बेटी है। उन्होंने कहा–मैं इसको कोई चीज देता हूं तो तुझे तो कोई एतराज नहीं है। उन्होंने कहा–कोई एतराज नहीं है। उन्होंने उसको बुलाकर कहा–बेटी! यह रुपए संभाल। यह पागल है। तुझे कुछ नहीं देगा। यह मेरे रुपये हैं और ये मैं अपनी बेटी को देता हूं। इनसे अपना काम चला लेना। चार हजार रुपये थे। वे महाराज जी ने उनकी झोली में डाल दिए। वे ले गई। वे भी कैसी भाग्य वाली माता थीं। ये कमाल की बातें हैं। उसने तीस हजार सत्संगियों को भोजन करवाया। वह ब्याज लाया करती थी। ब्याज पर जमा करवा दिए और उस ब्याज से भोजन लाया करती थी और जब चोला छोड़ा तो चार हजार रुपये उनमें और भी मिलाए। उस माता जी ने उस महाराज फकीरचन्द की घरवाली ने उसका भागों नाम था उसने कहा कि मेरे

सूत कात कर इकट्ठे किए हुए है। ये मेरे गुरु के उन रुपयों में मिला देना। ये मेरे गुरु की समाधि पर लगा देना। यह बात पुस्तकों में लिखी और बार–बार यह बात कही। मैं आप लोगों के आगे बनावटी बातें नहीं कहता हूं। मेरे सतगुरु ऐसे थे। यहां भी कोई न कोई सत्संगी होगा। उन्होंने एक दिन सत्संग में खड़े होकर कहा था। मुझे ये बातें याद नहीं रहती। अब तो काफी बातें याद नहीं रहती हैं। ताऊ हरलाल था। वह यहां होगा। रतीराम होगा और शायद मास्टर होगा। महाराज फकीरचन्द ने दिल्ली के सत्संग कपालसिंह के पास ये बातें कहीं कि धन्य हो! मेरे भाई रामसिंह ने एक संत बना दिया। मेरे से तो आज तक एक संत नहीं बना। ये मैं उनकी बातें बताता हूं और उन्होंने कहा था कि मैं गौड़ ब्राह्मण हूं। राधास्वामी धाम से आया हूं। मैं राधास्वामी और कुल मालिक हूं। उनसे संत नहीं बना। मेरे गुरु महाराज अरमान साहब ने कभी भी ये बातें नहीं कहीं कि मैं राधास्वामी धाम से आया हूं। मैं परमसंत हूं या कुछ हूं। उन्होंने उनके बारे में कहा कि इन्होंने एक संत बना दिया। हालांकि संत तो अपने विचारों से बना जाता है। तुम सभी संत बन सकते हो। कैसे बन सकते हो? सतयुग को सतयुग कैसे कहा गया? आज भी काफी लोगों के लिए सतयुग है। सतयुग किसको कहते हैं? जो सत्यवादी आदमी है उनके लिए तो हमेशा ही सतयुग रहता है। जो दुष्ट होते हैं उनके लिए कलियुग सतयुग में भी रहता है। क्या सतयुग में राक्षस नहीं थे? सतयुग में कितने राक्षस हुए हैं? उनके लिए तो सतयुग नहीं था। जो दुष्ट आदमी होते हैं उनके लिए सतयुग में भी कलयुग है और सज्जन आदमी हैं उनके लिए आज कलयुग में भी सतयुग है। यह तो अपने–अपने विचार पर निर्भर है। तुम सतयुगी बनो कलयुगी मत बनो। मुझे एक प्रेमी ने कहा–मैंने एक बात सुनी है। मैंने कहा–बताओ। उन्होंने कहा–मैं लड़ाई नहीं करता हूं। आप अपने गुरु भाई हैं उनके पास जाते हो वे तो यह कहते हैं लोगों में बैठ कर कि वह हमारे आगे हाथ जोड़ने के लिए आता है कि मेरे पास आओ, चलो। वह यही विनती करता है। मैंने कहा–हां! बिल्कुल विनती करता हूं। उसने कहा–वे यह भी कहते हैं कि उसे हमारी गर्ज है। हमें तो उसकी गर्ज है नहीं। एक सज्जन आदमी ने कहा–अगर इन ही बातों को पहचान लोगे तो तिर जाओगे। यही तो बात होती है कि उसे कोई गर्ज नहीं है और फिर भी वह तुम्हारे पास आ जाता है तो तुम डूब कर मर जाओ और तुम लोग डूब भी जाओगे। जो गर्ज को आता है यह तो गर्ज मतलब की होती है और जिसे कोई गर्ज नहीं है आना जाना तो वहीं है। मैं तो हर एक के ही बारें में यही सोचा करता हूं कि सब भाई खुश हों और प्यार करें। सभी ठीक रहें मैंने कभी किसी से बैर बांधने की कोशिश न की और न कोशिश करता हूं। मेरा और मानव दयाल का कुछ मतभेद था। मैं उसको गद्दी पर रखने वाला था। उसने खुद ने ही कहा था वे हुश्यारपुर के गुरु बने हैं ये उन्होंने नेगी डी. आई. जी. के आगे और कनाडा में नंद सिहरा उसके आगे कहा कि यही मुझे गद्दी पर बिठाने वाला है। नहीं तो ये मुझे गद्दी पर बैठने नहीं देते और कुछ बातें मैंने उसको कही। उसका दिमाग कुछ खराब सा हो गया। उससे कुछ कहा तो आज उसका टेलीग्राम आया है मेरे पास, उसकी धर्मपत्नी चलती रही तो मास्टर से कहा कि चलना है। इसने कहा–नहीं चलते। मैंने कहा–क्यों? मैंने कहा–वाह भई वाह! फिर तो तुम वैसे ही हो जाओगे। उसने टेलीग्राम दिया है वह गुजर गई है। अपना चलना उचित है। यह क्या बुरी बात है? क्या हम अपने स्वार्थ के लिए जाते हैं? अपने हिसाब से जाते हैं। बड़ा कौन होता है? कष्ण जी महाराज बड़े थे। जो बड़ा काम करता है वही बड़ा होता है। अपने आप को बड़ा कहता है और काम करता है गिरे हुए तो उसे बड़ा कौन कहेगा? अपने को आप ही बड़ा कह लो दूसरे नहीं तो इस तरह आदमी गिर जाता है। बड़ा काम करता है, वही बड़ा होता है। तुम बड़े काम करो। कष्ण जी महाराज के सब गीत गाते हैं। उसने ऐसे काम किए। तुम मत

मानो। मैंने खुद किए, दिल्ली में पूषा रोड़ पर सत्संग हुआ करता था। मैंने खुद पाखाने साफ किए हुए हैं ब्यास वालों के डेरे में। एक दिन मैंने आटा गूंदा और बहुत से काम किए। पाखानों का काम आया तो मैंने कहा–मैं डालूंगा पानी। क्या इससे मेरी गिरावट हुई? सेवा करने वाला, काम करने वाला गिरता नहीं है, कभी भी। सेवा करने वाला चढ़ता है। सेवा मिलनी चाहिए कि हमें सेवा मिल जाए। कष्ण जी महाराज की वाह–वाह हो गई। क्योंकि उन्होंने सब से छोटी सेवा ली। यह बर्तन साफ करने और पत्तल उठाने की सेवा कौन लेगा? कष्ण जी महाराज ने ली। ये बातें सुनी होंगी। फिर भी घटिया आदमी नहीं रूके। कहते हैं–

हल्दी जरदी ना तजे खटरस तजे न आम।
गुणवता गुण ना तजे, अवगुण तजे न गुलाम।।

छोटी सेवा उन्होंने ली। फिर भी शिशुपाल था। उसने ठोकर मारी। उसके एक सौ एक खोटे बख्शने मंजूर किये थे। कष्ण जी ने कहा था कि भूआ, मैं एक सो एक खोटे बख्श दूंगा। भूआ ने कहा–भाई! इतने तो ये करेगा ही नहीं। फिर तो यह जीवित रह जाएगा। पर जब उल्टा दिन आता है तब आदमी रूक नहीं सकता। कष्ण जी को जब वे बर्तन साफ कर रहे थे तो एक सौ एक ठोकरें मार दी। कष्ण जी ने कह दिया कि अब तू होश कर ले। अब तेरा वक्त आ चुका है। इतने खोटे जो भूआ ने कहे थे वे तो तेरे माफ कर दिए हैं। सो बड़े आदमी जो होते हैं वे किसी के ऐब नहीं देखते हैं और न वे अहसान करके कहते हैं कि हमने यह अहसान किया है। मैं अगर मेरे अपने ही सत्संगी से जो घटिया बात कर देता है उससे विरोध करूं तो अच्छी बात नहीं है। उसको सीधे रास्ते पर ले आऊं तो अच्छा है। आप लोग अपने ऊपर घटाओ इन बातों को कभी मेरे ऊपर ही ले आओ। मैं जो बातें कहना चाहता था वे बातें तो बाकी ही हैं।

तुम महात्मा और सत्संगी बनो, सतगुरु बनो। ऐसी कोई भी बात नहीं है। बन सकते हो। दो सतगुरु होते हैं। एक सतगुरु होता है, स्वतः संत आता है वह नर्क में हाथ नहीं देता है। वह तो स्वतः संत आता है और मैदान में आता है। मैदान में आकर अपना काम करके चला जाता है। यहां आकर जो संत बनते हैं उनको सतगुरु ही संत बनाता है। वह जो यहां आकर बनते हैं वे गद्दी के गुरु बनकर काम कर जाते हैं। कर भी लेते हैं। वे स्वतः संत नहीं होते हैं। ये गुरु के बनाए हुए सतगुरु होते हैं। स्वतः संत तो धुर दरगाह से आता है। उसकी निशानी क्या है? यह तो मैं कह भी नहीं सकता हूं। समझने वाले समझ जाएंगे। इशारा तो बहुत कर देता हूं। उनको न विद्या की जरूरत है न ही रूप की, न धन की ही जरूरत है। न ही इश्तिहार कढ़वाने की जरूरत है। न उनको ढोल बजवाने की जरूरत है। उन्हें तो एक खुदा से बंदगी करने की ही जरूरत होती है। उन्हें तो एक खुदा से बंदगी करने की ही जरूरत होती है। फिर तुम कहोगे कि जब वे धुर से आते हैं तो बंदगी क्या करते हैं? बदंगी तो फिर भी करनी पड़ती है। यह बात गलत है। पूरा भी पूरा काम करता है। फिर भी अपना नेम नहीं तोड़ते हैं। वे ही अगर नेम तोड़ देंगे तो फिर संसारियों का तो डूटा ही पड़ा है। कष्ण जी ने भी यह बात कही है कि मैं अपने नेम को रखता हूं। नहाने से लेकर के जितने भी कर्म है सभी करने चाहिए। नहीं तो संसारी लोग भी अपने कर्म को छोड़ देंगे। अगर मैं ध्यान में नहीं बैठूंगा तो मेरे सत्संगी भी नहीं बैठेंगे। मैं मुर्दा आसन में लेट जाता हूं। मेरे सत्संगियों को यह आदत पड़ गई कइयों को। कह देते हैं कि आप भी तो मुर्दा आसन में लेटते हो। मैंने कहा कि मेरी बातें छोड़ दो। अपना व्यवहार ठीक करो। मेरी बातों पर मत चलो। जब मैं आपको कहता हूं।

मैं एक मिशाल देकर बताता हूं। मेरा बाप जेवड़ी (रस्सी) बांटा करता था। मैं भी रस्सी बांटा करता था। जब वह बाण बांटता था तो उन रस्सियों में लफूसड़े (रेसे) छोड़ देता था। लफूसड़ों वाली रस्सी सस्ती बिकती है। मेरे बाप ने मुझसे कहा–तू इनमें लफूसड़े मत छोड़। क्योंकि लफूसड़े छोड़ेगा तो रस्सी मंदी

बिकेगी। मैंने कहा–तू भी तो लफूसड़े छोड़ता है। उसने कहा–मुझे तो लफूसड़े छोड़ने की बाण पड़ गई है। तू मत छोड़ सोचो! मैं क्या कहता हूं? मुझे तो मुर्दा आसन में लेटने की आदत पड़ गई है। पर आपके लिए यह आसन नहीं है। यह तो उन्हीं के लिए है जिनका वद्ध शरीर है। बूढ़े आदमियों के लिए है जिनकी सुरत काम करती है। जिन्हें शुरू में ही अभ्यास करना है उनके लिए यह आसन जहर है। उनको इस आसन में कभी भी नहीं जाना चाहिए। कोई ऐसा करता हो कभी। उन्हें तो वही आसन लगाना चाहिए जिसे मुर्गाबी आसन कहते हैं। गर्भ आसन कहते हैं जिसको संत महात्मा उकड़ लगाते हैं वह आसन लगाना चाहिए। उस आसन से अनेक बिमारियां दूर होती हैं और बहुत से दुख दूर होते हैं और बड़ी शान्ति मिलती है। सुरत बहुत जल्दी अपना रास्ता पकड़ लेती है। अगर कोई दुख तकलीफ भी हो तो मेरी बीती हुई बातें बताता हूं। घबराओ मत। लगे रहो। मेरे पास कई शिकायत करते हैं कि मेरा भजन नहीं बनता है। मैं कहता हूं कि तेरे अंदर कमी है। भजन तो पास में ही है। भजन न बने तो कोई भी बात नहीं है। इन्सान क्या कुछ नहीं कर सकता है? वह सब कुछ कर सकता है। भागीरथ गंगा को पहाड़ के ऊपर से ले आया। क्या नहीं किया उसने? सो सारे ही लोग भागीरथ के गीत गाते हैं। पर मैं राजनीति की बातें नहीं करता। हिम्मत वाला आदमी पानी को जमीन के नीचे ही नीचे भ्झी ले गया। सारे राजस्थान में गधे प्यासे मरते थे। अब वहां कौए नहाते हैं। यह हिम्मत थी तभी तो ले गए। इसीलिए अपनी हिम्मत मत हारो। जो हिम्मत हार जाता है वह गिर जाता है। किसी भी चीज से हिम्मत मत हारो। सच्चाई से काम करो।

मैं आप लोगों को बताता हूं फकीरचन्द महाराज की बातें। वे किताबों में लिखा करते थे। चाचा साधुराम बैठे हैं। मेरे पास एक लड़की यहा भी आई हुई होगी। उसने मुझे बहुत पैसे देने शुरू कर दिए। फिर कोई दुर्घटना हो गई और उसके मांगने वाले चारो ंतरफ से इकट्ठे हो गए। वह अज्ञान में थी। मैंने कहा–मास्टर! ये पैसे हमें खा जाएंगे। हमारे डेरे का सत्यानाश कर देंगे अगर इन को बरत लिया तो। मास्टर ने कहा–ये मानते तो नहीं हैं। ये तो अज्ञानी हैं। मैंने कहा–मैं इनको मनवा लूंगा। मैंने उन पैसों को इकट्ठे ही एक थैले में डालना शुरू कर दिया। जब उनके ऊपर तकलीफ पड़ी और उस वक्त उसके आदमी ने वहां जाकर कहा–मेरे तो मांगने वाले इस–इस तरह से खड़े हो गए। मैं क्या करूं। मैं तो डुबों ही दिया। मैंने कहा–नहीं। डरो मत। मेरे पास बहुत पैसे हैं। पर मैं दूंगा नहीं। तू चाचा साधुराम को ले आना। अब वह पैसे चाचा साधुराम ले गया। अब। जो उसने तीस–चालीस हजार रुपये थे सब ही वे देते रहे और मैं उस थैले में यू का यू ही डालता रहा। पता नहीं कितने थे। मैंने कहा–ले जाओ। आप क्या कहोगे?

मैं बातें बताता हूं। मेरे पास एक प्रेमी आया, मनीराम का लड़का जो हमारे पास रहता है। वह पांच हजार रुपये लेकर आया। उसने कहा कि मैं आश्रम में दूंगा। मैंने कहा–तेरे बच्चों को पाल पगला! वैसे तो उसके बड़े लड़के ने हरिद्वार में कमरा भी बना दिया। पर उसकी हालत ऐसी ही थी। मैंने उसको कहा कि तू अपने बच्चों को पाल। उसने कहा–मैंने तो ये आश्रम में देने हैं। मास्टर ने कहा–ले लो। इनको भी न्यारे रख देना। वही लड़का बारह महीनों के बाद आया कि मैंने एक प्लाट ले लिया। अब मुझे छः हजार रुपयों की जरूरत है। मैंने कहा–ये ले। तेरे पांच हजार थे और एक हजार तेरे ब्याज के लगा ले। अब बताओ। मैं आपको बातें बताता हूं। क्योंकि मैं देखता हूं कि ये पैसे खा जाएंगे। इस आश्रम को ही। मेरे दिमाग में जंची हुई बातें हैं। इसको पता है मेरे दिनोद के आश्रम में किसी के ऐसे ही पैसे लग गए थे। हमें परेशानी हो गई। मैंने कहा–क्या बात है? हमारी संगत में परेशानी कैसे हुई? इन्होंने कहा–पता नहीं है। मैंने सोच कर कहा–ये पैसे आए थे उसी दिन से परेशानी है। इन्होंने कहा–हां, यही बात है। अगर तुम इस कष्ट

से बचना ही चाहते हो तो जानवरों को उसका अनाज डाल दो। तब उनको अनाज डाला और हमारे आश्रम में शांति आ गई। मेरे काम करने वाले थोड़े से आदमी यहां पर हैं पर सब के दिलों में शांति है क्योंकि हम एकसे काम करते ही नहीं है। न मैं धोखा करता हूं और न फरेब करता हूं। उसको मैंने छः हजार रुपये दे दिए। एक और शराबी था, उसका यहां भाई आया होगा। उसका भाई जगमोहन है। जगमोहन ने कहा–वह बहन बड़ी अच्छी है वह सत्संगिन है उसका क्या नाम है। सो जगमोहन ने कहा–ले लो। ये शराबी है। कहीं तो ये देगा ही मैंने कहा–मैं तो नहीं लेता। उसने फिर कहा–ले लो। उसके पैसे ले लिए। थोड़े दिन के बाद उसने कहा–लड़कों की गाड़ी का टायर फट गया है। मैंने कहा–पांच हजार तो ये हैं और पांच हजार और भी ले जाना। मैं कर्जा साथ की साथ ही उतारता हूं। मैं यह भी बता देता हूं कि संत को जो भी कोई देता है, संत उसका कर्जा उसी वक्त उतार देते हैं। अगर संत का कर्जा दस–पन्द्रह दिन रह जाता है तो संत दागी हो जाता है। यह मैं आप लोगों को बता देता हूं। आप लोग सेवा देते हो उस सेवा का बदला तो उसी वक्त उतर जाता है। संत सेवा का बदला तो उसी वक्त उतर जाता है। संत सतगुरु उसको उसी वक्त उतार देता है किसी न किसी तरह से। उस को रखता नहीं है और जो रह जाता है तो फिर उसको मार ही देता है। यह अच्छा नहीं होता है। इसीलिए संत साथ ही साथ ही अपना कर्जा उतार देते हैं और भी मैं ऐसी बातें बताऊंगा कि मामूली बात तो नहीं थी। हमने यह कोठी ली। कोठी के बेचने वाले ने क्या कहा था? उसने यह कहा था कि मुझे तो दो या सवा दो लाख रुपये ही दे दो और एक लाख रुपये हमारे सेवा में लगा लो। इसमें से ये काट दो। हम तो सेवा में ही देना चाहते हैं। मैंने कहा–तू अपने सवा दो लाख रुपये ले ले। पर जो एक लाख रुपए फालतू बचते हैं तो वह धन तुम दोनों भाई अपनी–अपनी धर्मपत्नियों को दे दो। ये दोनों बेटी है। अगर वे उनके नाम करें तो उनका धर्म ठहरा। मैंने तो उनको दिला दिए। उन्होंने तो यही कहा था कि एक लाख रुपये हमारे सेवा में लगा दो। मैंने कहा–नहीं। तुम सेवा देने के ढंग में नहीं हो। सो उनको वे रुपये वापिस दिलवा दिए। मैंने तो यही सलाह दी कि तुम अपनी–अपनी धर्मपत्नियों के नाम करवा दो। आज जो सत्संग में आते हैं लोग स्वार्थ के लिए आते हैं। स्वार्थ के लिए ही गुरु बनाते हैं।

मैं और भी ऐसी बातें बता देता हूं। इसको दो लड़के हैं। तुम आश औलाद से पूछो–मेरे पास मास्टर बैठा है। एक लाख तीस हजार रुपये थैले में रखकर मेरे पास आकर रख दिए। मैंने हाथ लगा कर देखा। मैंने कहा–यह तो भाई नोटों की गड्डी है। मैंने कहा–मास्टर दौड़ कर आ। यह देख क्या रहा? इसने कहा–क्या है? मैंने कहा कि इसमें सर्प, गुटेरे हैं। इसने देखे और पूछा कि कौन लाया है? मैंने बताया कि यह लड़की और उसका भाई लाए हैं। इसने कहा–यह कैसे हैं? मैंने कहा–इनको वापिस दे दे। नहीं तो अपना नाश हो जाएगा। ये भी अज्ञानता में लाए हैं ज्ञान में नहीं। ज्ञान में इतनी सेवा कौन करता है? मैं कोई नोट छापता नहीं हूँ। ये सब संग के ही पैसे हैं। ये पैसे उसको देने पड़े। मैंने उससे नेम करवाया कि तू मेरा कहा तो मानते हो। उसने कहा–हाँ। मैंने कहा–मैंने ले लिए तुम्हारे ये उसने कहा–हाँ। मैंने कहा–मैंने ले लिए तुम्हारे ये रुपये लो। पर तुम्हारा भाई गरीब है। तेरे भाई को दे दे।

मैं न तो आर्य धर्म की निंदा करता हूँ और न ही सनातन धर्म की निंदा करता हूँ। न मैं जैनियों और मुसलमानों की कोई निंदा करता हूँ। सभी धर्म पवित्र है। धर्म कोई भी घटिया नहीं है। इन्सान घटिया हो जाते हैं। धर्म तो दो नहीं है एक ही है। जैसे सब इन्सान एक ही रास्ते से आए है, उसी तरह से धर्म भी सबका एक ही है। सब के सब मुँह से खाते हैं और गुदा से निकालते हैं। पेशाब का रास्ता भी उसी प्रकार से एक ही है। दो नहीं हैं। पर आप कहोगे कि ये इतने

मजहब भी क्यों बने हैं। ये मजहब तो पेटकुटों ने ही बना एि है। धर्म देखा जाए तो सबका एक ही है और इस एम धर्म को सुझकर आए तो बातें भी कर लो। धर्म को छोड़ कोई कहता है कि हम ब्राह्मण बड़े है। सोचिए, क्या कहा है? कोई कहता है कि हम क्षत्रीय बड़े हैं। कोई कहता कि हम जाट बड़े हैं। कोई कहता है कि हम जाति वाले बड़े हैं। इस दशा को कोई भी नहीं समझता है। बड़े तो सारे ही है। बल्कि अगर शूद्र रूष्ट हो जाए तो इन तीनों को जगह नहीं रहेंगी। इसी लिए संसार में संत महात्माओं ने बड़े अच्छे विचार से बातें बताई है। हमारे ऋषि–मुनियों की भी यही चाल थी। उन्होंने ये चार हिस्से शरीर के किए हैं। पर ये कब किए जाते हैं। सतगुरु पूर्ण और सच्चा हो वही इनको समझा सकता है। हमने जातियाँ बना दी। चार जातियाँ बना दी। क्षत्रिय, वैश्व, ब्राह्मण और शुद्र। अब बताओ। अब ये तो नहीं बताया कि हमारी तो दो ही जातियाँ थी। स्त्री और पुरुष। फिर ये जातियाँ किसने बनाई? ये हमारे कर्म ने बनाई है। मनु जी महाराज ने बनाई कि कर्म जैसा जो करता गया वैसा ही वह बनता गया। पर असली बात को तो हम भूल ही गए। वह कौन सी बात थी असलियत में तो इस शरीर के ही चार हिस्से बनाए थे। इस शरीर के हिस्से बनाए थे। इस शरीर के हिस्से लेकर हमने बाहर चार वर्ण बना दिए। मुझे तो ये भी पता नहीं है कि वर्ण किसे कहते हैं। मैं तो सुनी हुई बातें कहता हूँ। वर्ण जाति को ही कहते होंगे।

असलियत में देखा जाए तो ये चारों भाग इस शरीर में ही हैं। मस्तक है–ब्राह्मण, इसमें से ब्रह्म की बातें निकलती हैं। यही जब ब्रह्म में लीन है। इसमें जो पहुँच जाता है ऊपर उसे ही ब्रह्मलीन महात्मा कहा जाता है। उसी से वेद और शास्त्र बने हैं। कुरान और पुराण बने हैं। वही खुदा बन जाता है। यहाँ पहुँच कर हिन्दू उसको सोहं कहते हैं, हिन्दू उसको अनलहक कहते हैं। सोहं का अर्थ पढ़े लिखे लगा लेंगे। सोहं का अर्थ तो यही होता है कि तू भी ब्रह्म और मैं भी ब्रह्म और ब्रह्म क्या है तू भी काल है और मैं भी काल हूँ। यह काल का नाम है। बल्कि फकीर साहब ने तो इसे महाकाल बताया है–

सोहं सोहं क्या करे सरा न एको काज।

सोहं से तो एक काज भी नहीं बना। ये कबीर का दोहा है याद नहीं है। इसीलिए हम गिर जाते हैं। जब हम इससे ऊपर जाती है, ब्रह्म में पहुँच जाते हैं तो ब्रह्म लीन महात्मा कहते हैं उसको। वहीं जाकर जन्म–मरण मिटता है। इससे नीचे नीचे जन्म–मरण मिट नहीं सकता। क्योंकि इससे नीचे कब्रिस्तान है। ऊपर जाओगे तो दूसरा देश आ जाएगा। इसमें कब्रें खोदोगे तो मुर्दे ही निकलेंगे। यह मुर्दों की भक्ति, काल की भक्ति है। यह कभी आगे नहीं जाने देती है। इसीलिए इसे कहते हैं कि यह तो ब्रह्म है। इसको ब्राह्मण कह दिया। हमारे हाथ है ये क्षेत्रीय हैं कहीं भी शरीर पर चोट ह्येगी तो पहले हाथ ही अड़ेंगे। अब ब्राह्मणों का पहले क्या था? जो ब्रह्म में लीन होते थे वे उदासीन रहते थे। उनको न अपने बच्चों का ही ख्याल था न अपने परिवार का ही ख्याल था न अपने शरीर का ही ख्याल था। वे ब्रह्म में लीन रहते थे। उनकी रखवाली क्षत्रीय कहा गया। उनके बच्चों का जो पालन–पोषण किया करते थे उनका नाम शूद्र रखा गया। वे सारा काम करते थे। इस तरह से ये बाहर की जातियां बना कर बैठ गए। जातियां तो ये थीं कि यह शरीर है इसके चार हिस्से बनाए थे मस्तक है ये ब्राह्मण हैं इनको ताकत क्षत्रियों से मिलती है। वैश्व और शूद्रों से ताकत मिलती है। अगर वैश्व और शूद्र इनसे नाराज हो जाए तो यह कुछ भी नहीं कर सकता है। यह तो पागल ही हो जाएगा। पर अगर यह ब्राह्मण नाराज हो जाए तो ये तीनों बेकार हो जाते हैं। जिसका मस्तक ही खराब हो जाता है उसके ये तीनों ही बेकार और शराब हो जाते हैं। आप देखते हो कितने पागल घूमते हैं। ये क्या कर सकते हैं? उनका ब्राह्मण ही नाराज हो जाता है। जब चारों की एकता हो तभी हम जीवित रह सकते हैं। चारों की एकता का मतलब है कि ब्राह्मण भी

सच्चा और पूरा हो। यानी हमारा दिमाग ठीक होना चाहिए, ये ब्राह्मण है। हमारी दोनों भुजा भी मजबूत होनी चाहिए, ये क्षत्रीय है। ये हमारे शरीर की रक्षा करने वाला है और हमारा पेट भी ठीक होना चाहिए। कई योगी लोग पेट का बड़ा ख्याल रखते हैं। मुझे याद नहीं है।

महाराज जी बताया करते थे कि एक नेपाल का राजा पकड़ा गया और जब उसको फाँसी टूटने का आदेश आया तो कहते हैं कि उस वक्त उसने अपना लड़का बुलाया। उसने पूछा–क्या तुम किसी से मिलना चाहते हो? उसने कहा–मेरे लड़के को बुला दो। लड़का बुलाया गया। उस लड़के ने पूछा–पिता जी ! क्या बात है? उसने कहा–अपने हाजमें का ख्याल रखना। जाओ। लोगों ने कहा–ये क्या है? राजा ने कहा–क्या यह छोटी बात है? सो महात्मा लोग हाजमें का ख्याल रखते हैं जिसका हाजमा बिगड़ जाता है उसका विष्णु नाराज हो जाता है। उसका वैश्य नाराज हो जाता हैं वह मर जाता है। उस वक्त ब्राह्मण और क्षत्रीय भी दुखी हो जाते हैं। जिसके पेट में बीमारी हो जाती है, क्या उसके हाथ कोई काम कर सकते हैं? क्षत्रीय भी ढीले पड़ जाते हैं उसका दिमाग भी खराब हो जाता है। सो चारों का मेल यूं बताया गया है। ये हाथ क्षत्रीय और पेट वैश्य है। क्योंकि क्षत्रीय हाथ रक्षा करते हैं, सारे शरीर की और पेट को वैश्य क्यों माना गया है? खाया पीया सब पेट में जाता है। पेट में विष्णु का बासा है। वहां जाकर ये सब ही रंगों में बाट दिया जाता है। सो यू ही इसे वैश्य कहते हैं। सारी जातियों को वैश्य कर्ज दिया करते थे। सब की संभाल किया करते थे। सो ये पेट सब को कर्जा देता है। सारा खाया पीया पेट में जाता है और सारी ही रंगों को और ब्राह्मण, क्षत्रीय और शूद्रों को तकसीम कर देता है। अगर एक तरफ से नश–नाड़ियाँ टूट जाए तो सारा ही ढांचा बिगड़ सकता है। सो हमें अपने पेट का ख्याल रखना चाहिए कि कभी भी इसे खराब न करो।

सौ वैश्य नाराज हो गए तो सारा ही देश नाराज हो जाएगा। अब ये तीन तो हो गए। चौथा शूद्र है। यह हमारे पैर हैं। ये इन तीनों को लेकर घूमते रहते हैं। इसलिए कहते हैं कि शूद्र का धर्म ही सेवा करना है। शूद्र नाराज हो जाए तो बाकी तीनों ही बेकार हो जाते हैं। क्षत्रीय, वैश्य और ब्राह्मण भी। सो यह शूद्र सारे ही वजन को उठाए फिरते हैं। संतों ने तो यह मार्ग बताया था। अब तुमने बाहर चार वर्ण बना कर एक झमेला खड़ा कर दिया। पाप ही खरीर बैठे। जाति–पाति में फंसकर झगड़ा कर लिया। इसलिए महात्मा कहते हैं–

जात नहीं जगदीश के, संतों के भी नाँहि।
जो फंसा जात में, लख चौरासी माँहि।।

क्योंकि जो जाति में फंस जाता है वह नर्को से बच नहीं सकता। जाति तो स्त्री और पुरुष की होती है। ये बात तो जरूर भी मैं कहूँगा। दो ही सम्प्रदाय है–एक देवताओं का सम्प्रदाय और दूसरा राक्षसों का। जो दैवी सम्प्रदाय देवता है। वे इन्सान और आदमी हैं। जो राक्षसों सम्प्रदाय वाले हैं वे राक्षस हैं वे अण्डे, मीट खाते हैं, पापी हैं, सुलफे, गांझे पीते हैं। खोटे कर्मों में पड़े रहते हैं। दैवी सम्प्रदाय वाले सब अच्छे काम करते हैं। विषयों से दूर रहते हैं। मालिक का भजन करते हैं। सतलोक में पहुँच जाते हैं। लोगों को यह पता है कि जिस ईष्ट की पूजा करोगे वहीं जाना पड़ेगा। इसमें झूठ नहीं है, जहाँ का बीजा होगा, वहीं जाना पड़ेगा। जिसकी तुम पूजा करते हो वहां जाना पड़ेगा। मेरे पास कई भाई नाम लिए हुए आते हैं। मैं बैठता हूँ, देखता हूँ। मेरे पास ऐसी कसौटी तो नहीं है। पर सतगुरु की बताई हुई कसौटी है कि मैं उसके पास बैठकर बता देता हूँ कि इसका सुमरन पक्का है इसका सुमरन कच्चा है और यह भी बता देता हूँ कि वह सुमरन भी नहीं करता है। ये बातें छुपी नहीं रहती। जो सतगुरु ने सुमरन बताया है वे राधास्वामी नाम का सुमरन करने वाला कभी भी काल का मुंह नहीं देख सकते। उसको गंदा स्वप्न नहीं आएगा। कभी भी

उसको परेशानी नहीं होगी शरीर में। पर हम तो राधास्वामी नाम का सुमरन ही छोड़ देते हैं। तो फिर किसका सुमरन करते हो? यही तो कहते हैं–

एक साधे सब सधें, सब साधे सब जाँहि।
कहैं कबीर अब सोच समझ मन माँहि।।

अर्थात् एक के साधने पर सभी सध जाते हैं। वह कौन सा साधना है? वह तो सारी दुनिया की जड़ है। सारी दुनिया का मूल है। उस एक को ही पकड़ लो। एक मूल को पकड़ने के बाद डाली पत्तियाँ हाथ में आ जाती हैं। जब मूल को ही पकड़ लेते हैं तो कुछ भी बाकी नहीं रहता। सब कुछ आ जाता है। पत्ते–पत्तों को पानी देकर सब धोखा जाते हैं। सवैया है इसमें आता है–

पत्ते-पत्ते सींचते खाली रह संसार।

सारा खाली रह जाता है। नाम तो नाम ही होता है। नाम नामी से मिला देता है। तब हमारा जीवन सफल हो जाता है। पर मैंने तो यही बातें बताई हैं कि अपने विचार अच्छे रखा करो। पवित्र रखा करो। तुम्हारे ख्याल में बड़ी भारी ताकत है। इतनी भारी ताकत है कि कुछ कहा नहीं जा सकता है। मैंने आपको बताया कि जो अपने अभ्यास और कल्याण के लिए आता है, वह सत्संग में बराबर चला आता है और जो महन्त बन कर आते हैं वे तो तत्काल ही आना बन्द कर देते हैं। वे स्वार्थी बन जाते हैं। वे गिर जाते हैं और फिर वे उस जगह पर आते ही नहीं। सो संतों का मार्ग तो करणी का मार्ग है। बातों का मार्ग नहीं है। करणी करोगे तो पूरा काम मिल जाएगा। न करो तो तुम्हारी मर्जी है। मैंने थोड़ी सी बातें आपको बताई हैं कि संसार में झगड़ा बाजी कुछ भी नहीं हैं। तुम असलियत को नहीं समझते हो। हम असलियत को अगर समझ जाएँ तो हमारा जीवन ही सफल हो जाए। सो मैंने ये थोड़ी बातें बताई और ज्यादा क्या बताऊँ? अगर फिर सत्संग का टाइम मिला तो एक सत्संग रात को दे दूंगा।

।। राधास्वामी ।।